i:l & ukV

nhikoyh cktkj

हिन्दुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट एण्ड कम्प्यूटर स्ट्डीज द्वारा राजा की मण्डी रेलवे स्टेशन के पास दिनांक 03 नवम्बर 2018 को एस.ओ.एस. दीपावली बाजार का आयोजन किया गया है।

इस बाजार में दीपावली त्यौहार की आवश्यक वस्तुएं और घर की रौनक में चार चाँद लगाने वाले साज–सज्जा का सामान, त्यौहार के कपड़े, दिये, मोमबत्ती, खाने–पीने की सामग्री आदि मात्र 5 रू० से 50 रू० में उपलबध कराया गया।

bl volj ij ikQlj MkŒ uohu xlrk] fun'kd&,p-vkb-,e-lh-,l- ने विद्यार्थियों को समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व को समझाते हुए कहा कि ^^f'k{kk dk lgh eryc ekuork d ifr lonu'khyrk gA ge viu lekt rFkk ekuork d ifr viu dr0;k dk viu fgrk l Åij j[kuk lh[kuk gkxkA vU;Fkk gekjh lkekftd 0;oLFkk,a detkj iM tk,xh vkj eu"; lkekftd ik.kh ugh dgyk,xkA**

मेले में विशेष अतिथि के रूप में श्री रमेश चन्द्र वर्मा (स्ंटेशन मैनेजर – राजा की मण्डी रेलवे स्टेशन, आगरा) प्रो० एन. एस. जैन, डॉ० मीता कुलश्रेष्ठ (मेम्बर–अनफोल्ड फाउण्डेशन), डॉ० अरविन्द जैन (फिजिशियन), डॉ० अंजू जैन (प्रो०–आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा), श्री सुनील खेत्रपाल संस्थापक (टी.एस. टी.) आदि भी मौजूद थे। इस बाजार में पुरूष, महिलाओं तथा बच्चों के लिए कपड़ों, जलपान, विभिन्न खेल–कूद तथा मनोरंजन की दुकाने सजायी गयी थीं। टीम एस.ओ.एस. के चालकों द्वारा चाय व कढ़ी–चावल की स्टॉल भी लगायी गयी थी। बाजार में आए हुए लोगों द्वारा कढ़ी–चावल का खूब आनन्द लिया गया। इसके अलावा स्टेशन मैनेजर श्री रमेश चन्द्र वर्मा– राजा की मण्डी रेलवे स्टेशन, आगरा ने पौधों की प्रदर्शनी से लोगों का मन मोह लिया। डॉ० मीता कुलश्रेष्ठ एवं श्रीमती नीना मुन्याल जी ने प्लास्टिक की बोतलों द्वारा भवन निर्माण, कुर्सी, मोढ़े आदि वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण दिया।

इस बार मेले की विशेषता अनफोल्ड फाउण्डेशन की वेस्ट मटीरियल से बनायी गयी चींजों की दुकान रही। इस दुकान के सामानों को सभी ने सराहा। इस बाजार में लगभग 30 अस्थायी दुकाने लगायी गयी थीं।

मेले के आयोजन में सिद्धार्थ जैन, सार्थक, मानसी, दाबर, उपासना आदि विद्यार्थियों की विशेष भूमिका रही। इसके अतिरिक्त कॉलेज स्टॉफ में से श्री उमेश थापा, श्री लाल चंद, श्री लक्ष्मण आदि का भी सहयोग रहा।

nhikoyh cktkj dh fopkj /kkjk& यह बाजार एच.आई.एम.सी.एस. के विद्यार्थियों की इस विचार धारा द्योतक है कि त्यौहारों के मनाने का आनन्द सभी के साथ आता है। यदि आप त्यौहार मनाते हैं परन्तु आपके पास में कुछ ऐसे लोग हैं जिनके घर मिठाई तो क्या दिये और बताशे खरीदने तक के पैसे नहीं हैं तो आपका त्यौहार बेमानी है। हम अगर अपने खर्च में से चार पैसे कम खर्च कर उस घर में दिया जला सकें तो जो आनन्द प्राप्त होगा अपने आप में अतुलनीए होगां।

fopkj/kkjk dk;kUo;u& इस विचारधारा को कार्यान्वित करने के लिए काफी धन की आवश्यकता थी, जो कि विद्यार्थियों के लिए बड़ी समस्या थी। इस समस्या का समाधान भी इस विचारधारा में ही निहित था।

विद्यार्थियों ने अन्य सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अन्य कर्मचारियों से ऐसी वस्तुएं जिन्हें वे खरीद तो लाते हैं परन्तु उपयोग में नहीं लेते, दान देने का निवेदन का किया। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति दीपावली से सम्बंधित कोई भी वस्तु खरीद कर देना चाहे तो उसे भी बाजार में रखा गया।

cktkj d: lkFk ic/ku f’k{kk& बाजार सजने के बाद भीड़ को संभालना तथा व्यवस्थाओं को दुरूस्त रखना अत्यंत ही आवश्यक था। इन व्यवस्थाओं को निम्नलिखित तरीकों से संभाला गया।

1. ;krk;kr 0;oLFkk& बाजार का आयोजन राजा की मण्डी रेलवे स्टेशन के उद्यान में किया गया था। इसलिए विद्यार्थियों तथा अन्य ग्रामीणों को लाने अथवा उन्हें वापस छोड़ने के लिए बसों का इंतजाम किया गया है।
2. nqdkuks ij 0;oLFkk& बाजार में लगायी गयी अस्थायी दुकानों में अफरा–तफरी न मचे इसके लिए विशेष इंतजाम किये गये। जिसका संचालन विद्यार्थी खुद कर रहे थे इसके अतिरिक्त इस बात का भी ख्याल रखा जा रहा था कि कोई भी व्यक्ति सस्ती चीजों का गलत फायदा न उठाए इसके लिए Rationing (नियंत्रित वितरण प्रणाली) की व्यवस्था की गयी।
3. in’kZu 0;oLFkk& दुकानों पर विद्यार्थी वस्तुओं के सही उपयोग तथा उसकी उपयोगिता भी समझ सके। ताकि ग्रामीण उस वस्तु का पूर्ण उपयोग कर सकें।
4. vfrfjDr vk;& इस बाजार में कालेज के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों जिनके घरों में कोई अन्य कार्य होता जैसे कि दिये बनाना, मठ्ठा पिरोना आदि किया जाता है, उन्होंने भी अपनी दुकाने सजायीं तथा लागत काटकर जो मुनाफा होगा वह एस.ओ.एस. भोजनालय के लिए दान दिया। इस तरह से उन कर्मचारियों ने स्वरोजगार के लिए अपनी सम्भावनाओं को तलाशा।

इन व्यवस्थाओं ने विद्यार्थियों को उस शिक्षा से रूबरू करवाया जिसे उन्होंने केवल किताबों में पढ़ा था। कई अनुभव तो ऐसे होते हैं जो कि किताबों में भी नहीं दिये होते तथा वे स्थान तथा समयानुसार बदलते रहते हैं।

मेले का आयोजन शिक्षकों की देखरेख में हुआ जिसमें डॉ० शीतल सचदेवा व श्री शान्तनु कुमार साहू का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में निदेशक महोदय ने सभी को शुभ दीपावली का संदेश दिया।